JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिलाओं की स्थिति सुधार में कुटीर उघोगों की भूमिका समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कुमकुम षर्मा सहायक आचार्य, राजनीतिक विज्ञान विभाग, आर्या परफेक्ट ग्रेजूऐट कॉलजे ओमक्स सीटी अजमेर रोड. जयपुर राजस्थान (भारत)

ARTICAL DETAILS

Artical History

Keywords

कुटीर उद्योग जनतंत्र ग्रामीण उद्योग, स्वरोजगार महिलाए, सामाजिक आर्थिक

ABSTRACT

कुटिर उद्योग जनतत्र के विकास व भागीदारीता में अत्यन्त महत्वपर्ण स्थान रखता है। भारतीय लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के माध्यम स कुटीर उद्योगो के माध्यम से महिलाओ ंकी स्थिति मे ं सुधार के प्रयास मूल जडो ंस ेप्रारम्भ करने होगे। तभी हम विषय की गहराई और सवंदेनषीलता को परख पाएगे।कुटीर उद्योग के माध्यम से यही जानने का प्रयास किया जायेगा कि आज किस प्रकार महिलांए घर की चार दिवारी मे रहकर भी अपने परिवार का

पालन–पोषण कर सकती है, क्योकि अगर पुरूष जीवन रूपी गाडी का एक पहिया है तो दूसरा पहिया महिला ही है और अगर वह स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर है तो परिवार ही नही देष भी आत्मनिर्भर बनेगा जिसके लिए प्रयास आवष्यक है।

प्रस्तावना

कुटीर उद्योग वह उद्योग होते हैं जिनका सचांलन पर्णू रूप से या आंषिक रूप स`परिवार के एक ही सदस्यो द्वारा किया जाता है।

कुटीर उद्योगों में वस्तुओं का निर्माण कम पूंजी एवं अधिक कुषलता से अपन`हाथो ंस`किया

जाता है। कुटीर उद्योगो ंमे ंउत्पादन एव ंसवेाओ ंका सृजन अपन`धर मे ंही किया जाता है न कि किसी कारखाने म।

हमारें देष में प्राचीन काल से ही कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ब्रिटिष शासन के भारत आगमन पष्चात् भारत मे कुटीर उद्योग तेजी स`नष्ट हुए है परन्तु स्वतंत्रता के पष्चात् कुटीर उघोगो को पुनः बल मिला और वर्तमान मे कोरोना महामारी स्थिति मे कुटीर उद्योग आधुनिक तकनीकी के समान्तर भूमिका निभा रहे है। वर्तमान मे ंकुटीर उद्योगो ंमे ंकुषलता एवं परिश्रम के अतिरिक्त छोटे पैमाने पर मषीनों का भी उपयोग किया जाने लगा है। प्रो. काले ने कुटीर उद्योगो को परिभाषित करते हुए कहा है–

''कुटीर उद्योग इस प्रकार के सगंठन को कहते है जिसके अन्तर्गत स्वतंत्र उत्पादनकर्ता अपनी पूंजी लगाता है और अपने श्रम के कुल उत्पादन का स्वयं अधिकारी होता हैं।

स्वरोजगार बेहतर भतिष्य का नया विकल्प, अमीर बनने के तरीके , अवसर को तलाषे, आखिर गृह और कुटीर उद्योग कैस`विकसित हो, आधुनिक कुटीर उद्योग नया कारोबार आरम्भ करने पर विचार कर रहे है।

कुटीर उद्योगो को ग्रामीण उद्योगो या पारम्परिक उद्योगो के रूप मे ंभी जाना जाता है वे अन्य लधु उद्योगो की तरह पूंजी निवेष मानदंडो से परिभाषित नही होते है।

भारत मे ंकुटीर अद्योग की भूमिका

भारत में कुटीर उद्योग देष के सामाजिक आर्थिक विकास में अपने योगदान की दृष्टि स`एक विषेष स्थान रखते है। कुटीर उद्योगो पर भारत की औद्योगिक रणनीति का एक अभिन्न अंग बनने के लिए जोर रहा है। कुटीर उद्योगो मे ंइस्तेमाल होने वाला अधिकतर कच्चा माल कृषि क्षत्रे से आता है। अतः किसानों के लिए अतिरिक्त आय की व्यवस्था कर भारत की अर्थव्यवस्था का`बल प्रदान करता है

इनमे कम पूजी लगाकर अधिकतर उत्पादन किया जा सकता है। और बडी मात्रा मे अकुषल बरोजगारों को रोजगार प्रदान कराया जाता है।

कुटीर उद्योग बेरोजगारी दूर करने मे सहायक होते है क्योकि कुटीर उद्योगो को चलाने के लिए कम पूंजी की आवष्यकता होती है। कुटीर उद्योग रोजगार का अवसर प्रदान करके बेरोजगारी की समस्या को हल करने में सहायक होते है तो उन क्षेत्र में कम पूंजी के द्वारा कुटीर उद्योगो का विकास करके देष का विकास किया जा सकता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था मे कुटीर उधोग महत्वपर्ण है जा कि विभिन्न सामाजिक आर्थिक उद्देष्यों की पूर्ति के लिए आवष्यक है जैसे कि त्रण के बोझ को कम करना, विदेषी प्रत्यक्ष निवेष आवक की बढोतरी, आत्मनिर्भर वितरण का बढाना, वर्तमान आर्थिक परिपेक्ष्य का वैविघ्यपर्ण और आधुनिक बनाना आदि।

भारत जैस गांव प्रधान देष मे जिनमें कुटीर उद्योग ही आय का एकमात्र स्त्रोत था, वही गांवों की सरंचना में परिवर्तन के साथ ही उद्योगों में भी काफी बदलाव आते दिखाई पड रहे है। बहुत स कुटीर उद्योग बड उद्योगो से मुकाबला न कर पाने के कारण सकंटग्रस्त स्थिति में है अथवा समाप्त हो गए है।

कुटीर उद्योगों का ह्रास भारत मे अंग्रेजी शासनकाल की नीतियों के कारण प्रारम्भ हुआ था। उस समय जबकि कुटीर उद्योग ही व्याप्त थे। गांव–गांव में हथकरधा, हस्तषिल्प, तेल परेने का कोल्हू, आचार, हेण्डलूम, पापड जैस विभिन्न उद्योग निजी स्तर पर स्थापित थे। इग्लैण्ड मे औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भ स वहां बड–बडे कारखानो की स्थापना की गई और तैयार माल को भारत बाजार में उंची कीमतो पर बचो जाता था जिससे उद्योग धन्धे नष्ट हो गए। कुछ समय पष्चात् गांधी जी ने घर–घर सूत कातने के लिए लोगो को पेरित किया और खादी का प्रचार पस्रार किया जिससे कुटीर उद्योगो को बल मिला। अतः स्पष्ट है कि कुटीर उद्योगो को पूरी तरह समाप्त नही किया जा सकता है क्योकि कुटीर उद्योगो के सचांलन में निजी स्तर पर लोगो के प्रयास जुडें होते है। गांव, कस्बो तथा शहरो मे आटा चक्की, तेल मिल, हथकरघा, रेषमी व खादी, फसलो

की कटाई–बिनाई आदि विभिन्न कार्य कुटीर उद्योग क स्तर पर हो रहें है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास कुटीर उद्योगो मे एक सुखद घटना है क्योकि इससे क्षमता मे तीव्र वृद्वि हुई है। छोटे स्तर पर ही कुछ लोग धातुकर्म चमडे का काम, विभिन्न मषीनो के पुर्जे बनाने का काम, इटे बनाने का काम, कागज की थैली बनाने का काम, आचार, जैम, पापड, बिस्कुट आदि कुटीर उद्योग अपना रहे है। शहरो म साइबर कैफे, चाय–पान के दुकानो,

नाष्ता, टाइपिंग केन्द्र कम्प्यूटर षिक्षा के केन्द्र, वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण धर मे ंमास्क निर्माण आदि कुटीर उद्योग धन्धे का रोजगार अपनाया जा सकता है।

कुटीर उद्योग मे ंमहिलाओ ंकी भूमिका

भारत देष मे ंजहां वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास से कुटीर उद्योग ने भारत की अर्थव्यवस्था में रीड की हड्डी का काम किया है वही दूसरी ओर महिलाओ ंको भी कुटीर उद्योगो ंने आत्मनिर्भर प्रदान की है। कुटीर उद्योगो ने हर वर्ग की महिला चाहे वह षिक्षित हो या अषिक्षित , उन्हे आगे बढने के लिए प्रेरित किया है। महिलाए आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए घरों में रहकर ही काम कर रही है। सरकारे गांवो में महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कुटीर उद्योगो को बढावा दे रही है।

वर्तमान मे महिलाए सिर्फ रसोई घर तक ही सीमित नही है। महिलाओ ंने अब अपने समय का मूल्य पहचान लिया है, अब व`घर में खाली नही बैठना चाहती है। आज औरते घर बैठे ही मोमबत्ती, अगरबत्ती, बिंडी, पापड, फूल माला आदि बनाने का काम कर रही है, महिलाओ ंने घर में रहकर ही खुद का`कुटीर उद्योगो से जोड लिया है। महिलाओं द्वारा कुटीर उद्योग अपनाये जाने से उनके घरों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है और महिलाओं के आत्मविष्वास में भी बढोतरी हुई है।

राष्ट्पिता महात्मा गांधी जी ने रचनात्मक कार्यक्रमो ंजैस`सतूकातना,चरखाचलाना आदि कुटीर उद्योगो के माध्यम से महिलाओं के उत्थान की बात कही है। जिससे महिलाएं आत्मनिर्भर बनकर देष के विकास और प्रगति में योगदान दे सके। कुटीर उद्योग भारतीय अर्थवयवस्था का महत्वपर्ण व अभिन्न है जिसकी उपक्षा नही की जा सकती है जिसके लिए 1950 मे ंयोजना आयोग का गठन राष्टीय विकास योजना बनाने और क्रियान्वित करने के लिए किया गया है, स्वतंत्रता के पष्चात् 1948 मे ंदेष मे ंकुटीर उद्योग बोर्ड की स्थापना की गई। वर्तमान मे सकल घरेलु उत्पाद को बढाने में कुटीर उद्योगो में महिलाओ ंकी बडी भूमिका है। कुटीर उद्योगों के माध्यम स`महिलाओ ंकी दक्षता और काबिलियत पर मुहर लगाई जाती है। कुटीर उद्योग ही नही अपितु प्रत्येक क्षत्रे मे ंमहिलाओ ंकी भागीदारी बढी है। महिलाओ ंने खुद को रसोई तक सीमित न रखते हुए कुटीर उद्योग के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

गांवो मे आज भी कई धंटो में महिलाओ को पर्दे रखा जाता है। आज भी उनकी सीमा घर की चार दीवारी तक है। गांवो ंमे ंलडकियों और महिलाओ ंको ज्यादा षिक्षित भी नही किया जाता, और घर के काम मे निपुण कर, कम उम्र में ही उनकी शादी कर दी जाती है। कुटीर उद्योग पर्दे के भीतर भी रोजगार के अवसर देता है। अब महिलाएं घर बैठे भी कमा सकती है। भारत मे ंआज

भी 72.2 प्रतिषत लोग गांवो में रहते है।वहां कुटीर उद्योगो ंकी सख्त जरूरत है। जिसके लिए भारत सरकार द्वारा प्रयास भी किये गये है। कुटीर उद्योग जो महिलाए घर के बाहर नहीं जाती उनक`लिए बहेतर विक्लप है। इन उद्योगो के लिए केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार स`लाइसेस प्राप्त करने की आवष्यकता नही होती है। इसका पंजीकरण भी अनिवार्य नही है तो आसानी से इन उद्योगो के ष्षुरू किया जा सकता है। गाव ंकी महिलाएं सगंठित होकर कुटीर उद्योगो ंकी शुरूआत कर सकती है। स्वयं सहायता समूह पापड, राखियां , मंगोडी , आचार , सिलाई , कढाई आरी–तारी ,नमकीन, मास्क जैसे कई छोटे–बड`काम कर सकती है। गांवों मे ंचलने वाले कुटीर उद्योगों कमजोर गुणवत्ता आधुनिक तकनीक कमी और मार्केटिंग नेटवर्क नही मिल पान`के कारण लगभग बदं स`हो ं जाते है। जिसके लिए भारतीय लधु उद्योग विकास बैंक की स्थापना की गई थी। ताकि क्षैत्रो ं मे ंकुटीर उद्योग का विकास किया जा सके। कुटीर उद्योगों के माध्यम स`षिक्षा व जागरूकता के अभाव से जो महिलाए ंइघर–उघर भटक रही है, उनका सषक्तिकरण के माध्यम स`विकास किया जायेगा आरे उन्हे रोजगार के अवसर प्रदान किये गये है। ग्रामीण स्तर पर महिलाओ ंको नारीषिक्षा, कृषि, महिला स्वास्थ्य के मुद्दो ंपरा योजनाएं

प्रारम्भ कर रोजगार से सम्बधित समस्या का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान मे ंमहिलाओ ंका उद्यम की आरे रूचि बढ रही है जिसके राष्टीय आय व भारतीय अर्थव्यवस्था मे ंउनका योगदान लगातार बढता जा रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया है। भारत देष की आधी जनसंख्या महिलाओं की है। महिलाएं राष्ट् उन्नति एवं विकास में पुरूषो ं स`कदम से कदम मिला कर आगे बढ रही है। आधुनिक तकनीकि के प्रयोग, निवेष, निर्यात बाजार मे ंअपनी उपस्थिति देने अन्य महिलाओ ं को प्रोत्साहित करने में महिला उद्यमियो ंका योगदान महत्वपूर्ण है। महिलाएं प्रतिभाषाली एवं योग्य है अतः महिला उद्यमियों के विकास की आवष्यकता

होती है। जिससे वह देष के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सके।

वर्तमान में महिलाएं न केवल कुटीर उद्योग अपितु उद्योग के हर क्षेत्र मे ंअपना वर्चस्वस्थापित कर रही है। भारतीय महिलाआं`ने विभिन्न ब्रांड स्थापित कर अन्तर्राष्टीय ख्याति प्राप्त की है जैस–े शहनाज हुसैन ने ब्यूटी क्षेत्र में, विनिता जैन ने बुटिक क्षेत्र मे। केन्द्रीय सूक्ष्म, लधु एवं मध्यम उद्यम और सडक परिवहन एव ंराजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी नं महिला उद्यमी सषक्तिकरण सम्मेलन 2020 के उद्धाटन सत्र मे ंकहा कि महिला उद्यमियो ंके साथ कोई भेदभाव नहीं करने के लिए प्रतिबद्व है। उन्होने महिला उद्यमियो ंस` उत्पादनो ंकी गुणवत्ता और वितरण मे उच्च मानको को बनाए रखने का आह्वान किया। महिलाओं के द्वारा कुटीर उद्योग के क्षेत्र मे ंभी अपनी

महत्वपर्ण भूमिका निभाती है। कुछ योजनाएं ऐसी है जिनके माध्यम स`महिलाओ ंको आर्थिक चुनौतियो ंका सामना करने मे ंमदद मिलेगी जो इस प्रकार है–

(1) अन्नपूर्णा स्कीम(फूड कैटरिगं से सम्बधित)

(2) स्त्री शक्ति पैकेज (महिला उद्यमियों को लोन देने से सम्बधित)

(3) सेंट कल्याणी स्कीम (नये व पुरानी उद्यमि महिलाओ के लिए)

(4) मुद्रा योजना स्कीम (छोटी इकाई की महिला उद्यमियों)

(5) महिला उद्यम निधि स्कीम (छोटे स्तर की महिलाओं के लिए)

(6) देना शक्ति स्कीम(महिलाओं को 20 लाख रू. तक के लोन के लिए)

(7) ओरियंट महिला विकास योजना स्कीम (बिजनेस महिलाओं के लिए)

(8) भारतीय महिला बैक बिजनेस लोन(पब्लिक बैकिग कंपनी महिला उद्यमियो ंके लिए) अतः इन सभी योजनाओ ंकी मदद स`महिलाए आर्थिक रूप स`सहयोग प्राप्त कर उद्यम में अपनी भूमिका निभा सकती है।

देष के प्रधानमंत्री श्री मोदी ने महिलाओ ंको स्वयं की शक्तियों को अपनी योग्यता और अपने हुनर को पहचानने का अवसर उपलब्ध कराने की बात कही है। उन्होने कहा कि देष के ग्रामीण अंचलो, छोटे उद्यमियो ंऔर श्रमिको ंके लिए स्वयं सहायता समूह बहुत महत्वपर्ण भूमिका निभा रहे है।

आज विष्व जिस कोरोना सक्रंमण काल स`गुजर रहा है उसस`आर्थिक स्थिति पर भी काफी प्रभाव पडा है। लेकिन एक वर्ग ऐसा भी है जिसने इस सक्रंमण के दौर में स्वयं को सभंालते हुए अपने पूरे परिवार को सभंाला है। वह है– महिलाएं– जिसने अपने जोष और जज्बे से इस बुरे वक्त में भी घर व ससंथानों में मास्क का निर्माण कर अपनी पारिवारिक आर्थिक मजबतूी को

सभंाला है। महिलाओ ंने लॉक डाउन के दौरान मास्क निर्माण का कुटीर उद्योग अपनी आर्थिक स्थिति संभाली और परूे परिवार का मील का पत्थर साबित हुई। कुटीर उद्योगो ंकी सचूीः–

–टिपिन बनाने का कुटीर उद्योग

–अगरबत्ती बनाने का काम

–नमकीन बनाने का काम

–साडी व कपडो का कुटीर उद्योग

–रेस्टोरेन्ट व बकेरी कार्नर उद्योग

–मसाला बनाने का उद्योग

–फर्नीचर बनाने का उद्योग

–बर्तन बनाने का उद्योग

–पापड बनाने का उद्योग

–साबुन बनाने का उद्योग

–कपडो की छपाई का उद्योग

–चूडी बनाने का कुटीर उद्योग

–कपडो ंकी सिलाई का काम

–मेंहदी लगाने का व्यवसाय

–सौदर्य एवं श्रृंगार प्रसाधन कुटीर उधोग

–दोना पत्तल बनाने का उद्योग

–गाय–भेड बकरी का पालन उद्योग

–आइसक्रीम बनाने का उद्योग

–आचार बनाने का उद्योग

–मुर्गी पालन का उद्योग

–मास्क बनाने का उद्योग उपरोक्त सभी कुटीर उद्योग महिलाआं`के द्वारा प्रारम्भ कर अपन`आप को आत्मनिर्भर व अपने परिवार को सम्बल प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार के उद्योगो ंमे ं10,000 से 1.50 लाख तक निवेष हो सकता है। कुटीर उद्योग परिश्रम पर आधारित है इस उद्योग स`आप प्रतिदिन 500 स`1000 रू तक घर बैठे कमा सकत`है। इन कुटीर उद्योगों के अलावा कुछ ग्रामीण कुटीर उद्योग होते है जो गांवो के लिए जाते है

–कृषि सहायक कुटीर उद्योग –अन्य
कुटीर उद्योग

आधुनिक तकनीकि के दौर मे आज सरकार द्वारा महिलाओं को कुटीर उद्योग के लिए लोन भी उपलब्ध करवाएं जाते है जिनकी ब्याज दर बहुत ही कम होती है।

कुटीर उद्योग के लिए लोन किसान क्रेडिट कॉर्ड योजना के द्वारा बिना किसी दस्तावजे के मिल जाता है। इसके लिए सरकार द्वारा मुद्रा लोन भी दिया जाता है। बैको द्वारा दी गई जानकारी को परी तरह समझकर महिलाएं इसका लाभ उठा सकती है। एसी महिला उद्यमी जो कलात्मक शैली के द्वारा या नई पद्वति के द्वारा कुटीर उद्योग शुरू करना चाहती है उन्हे (सी.जी. एफ.टी)के तहत् लोन दिया जाता है। जिससे महिलाएं अपने व्यवसाय मे बिना रूकावट के निरन्तर प्रगति कर सके।

सरकार ने छोटे–छोटे व्यवसाय को सरंक्षीत करने के लिए सब्सिडी का प्रावधान रखा है। यह सब्सिडी लोन की किस्त नियमित रूप से भरने पर अंतिम अवधि मे दी जाती है।

सरकार ने एसी कई विकास योजनाएं लागू की है जिससे छोटे उद्यमी लाभ ले सकते है– ये योजनाए इस प्रकार से है:

–प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
–प्रधानमंत्री रोजगार जेनरेषन प्रोग्राम
–प्रधानमंत्री रोजगार योजना
–राष्टीय लघु उद्योग निगम आदि

उपरोक्त योजनाओ के माध्यम स सरकार ने कुटीर उद्योग को बेहतर बनाने का प्रयास किया है। महिलाओं को कुटीर उद्योग मे आगे बढने मे मदद उनका (कुटीर उद्योग) का रजिस्टेषन करवा कर भी किया जा सकता है। महिलाओं को कुटीर उद्योग का रजिस्टेषन करवाने का फायदा यह है कि उनको बडा लोन आसानी से प्राप्त हो जाता है। जिससे महिलाएं अपन व्यवसाय का विस्तार भी कर सकती है। अपन व्यवसाय का रजिस्टेषन एस एस ए आई मे करवा सकते है। कुटीर उद्योगो को जिला उद्योग केन्द्र द्वारा संरक्षण भी किया जाता है। जिससे अपना कर महिलाएं आज पुरूषों के समान आगे बढकर गाडि के दो पहियो के समान भूमिका निभा रही है। प्रस्तुत शोध अध्ययन को छः अध्यायों मे विभाजित किया गया है:–

प्रथम अध्याय परिचयात्मक – इस अध्याय मे ंविषय का परिचय देते हुए शोध साहित्य की समीक्षा, अध्ययन पद्वति क्षेत्र ,परिचय, अध्ययन के उद्देष्य, कुटीर उद्योग का महत्व सपष्ट करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय– कुटीर उद्योग का अवधारणारणात्मक विष्लेषण प्रस्तुत अघ्याय मे ंकुटीर उद्योग का अर्थ अन्य उद्योगा ेस ेइसकी तुलना, महिलाओ ंके लिए कुटीर उद्योगो की आवष्यकता, कुटीर उद्योगो के लिए योजनाएं, प्रस्तावित योजनाओ ंआदि को विष्लैषण किया गया है। तृतीय अध्याय–आधुनिक अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगो को सिंहावलोकन चतुर्थ अध्याय– महिलाओं की स्थिति में सुधार व अर्थव्यवस्था में उनका योगदान(कुटीर उद्योगों के माध्यम से) इस अध्याय में कुटीर उद्योग मे ंमहिलाओ ंकी भूमिका का अध्ययन किया जायेगा। महिलाओं द्वारा कुटीर उद्योग अपनाये जाने से उनकी पारिवारिक स्थिति मे किस प्रकार बदलाव या सुधार हुआ है, महिलाओ ंके द्वारा कौन–कौन स ेकुटीर उद्योग अपनाये जा रहे है, महिलाएं अषिक्षित होते हुए भी किस प्रकार इन उद्योगो को अपनाकर आगे बढ रही है और अर्थव्यवस्था मे ंकिस प्रकार सहयोग प्रदान कर रही है, का अध्ययन किया गया है। पचंम अध्याय– अध्ययन क्षेत्र की स्थिति– (जयपुर जिले के सांगानेर क्षेत्र के संदर्भ मे) प्रस्तुत अध्याय में जयपुर जिले में महिलाओं के द्वारा स्थापित किये गये कुटीर उद्योग के माध्यम स ेउनकी स्थिति मे ंसुधार आया, शोधार्थी द्वारा इस शोध मे यह जानने का भी प्रयास किया जायेगा कि जयपुर जिले मे ंकितने परिवारो ंमं कुटीर उद्योग की क्या स्थिति है और उनमें महिलाओं की क्या स्थिति है ओर वर्तमान में क्या–क्या सुधार किये गये है का अध्ययन किया है।

षष्ठम अध्याय– शोध निष्कर्ष एवं सुझाव इस अध्याय में समस्त अध्याया का सक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए कुटीर उद्योगो में महिलाओ ंका योगदान, महिलाआं ेके लिए कुटीर उद्योगों से सम्बधित सुझाव और समाधान, चयनित क्षेत्र मे ंकुटीर उद्योगो स ेसम्बधित सुझाव तथा लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के साथ कुटीर उद्योग मे महिलाआं ेके लिए सम्भावित प्रयास का उल्लेख किया जायेगा।